Problems of old aged: an analytical study

बुजुर्गों की समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

महेन्द्र प्रताप तिवारी

शोध छात्र (समाजशास्त्र)

डॉ राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

सारांश

बुढ़ापा रुग्णता और जीर्णता के लिए सुग्राह्य अवस्था है । इस अवस्था में व्यक्ति को खुशहाल बनाना आज की एक अपरिहार्य चुनौती है । सामाजिक, मानसिक, आर्थिक और स्वास्थ्यपरक समस्याओं के कारण जीवन की संध्याबेला व्याधियों और कमियों के भँवर में फँसा हुआ है । आधुनिकीकरण, नगरीकरण और औद्योगीकरण के कारण समाज और परिवार में वृद्धजनों के प्रति दृष्टिकोंण का इस प्रकार अवमूल्यन हुआ है कि युवा पीढ़ी उनसे स्वस्थ्य अन्तःक्रिया से विरत होता जा रहा है । शारीरिक–मानसिक रूप से कमजोर वृद्धजनों को परिवार के सदस्यों से सहयोग न मिलने के कारण उनकी समस्याओं में वृद्धि होती जा रही है । वृद्धजनों के दृष्टिकोंण में लचीलापन की कमीं और युवा पीढ़ी में परंपरागत मूल्यों से विमुखता के कारण दोनों में असमायोजन बढ़ रहा है । परिवार और समाज में वृद्धजनों की उपादेयता का अवमूल्यन हुआ है । उचित समाजीकरण के अभाव में संताने वृद्धजनों के साथ सहज व्यवहार नहीं करती हैं । नई पीढ़ी द्वारा स्वयं के प्रजननमूलक परिवार के ही पालन पर केन्द्रित होने के कारण व्यक्ति 'वृद्धावस्था' में उपेक्षित और दीन–हीन होकर अवसादग्रस्ता के अवांछित पंक में पड़कर शारीरिक–मानसिक दुःखों को भुगतने के लिए अभिशप्त है । स्वस्थ शरीर, सुपाच्य आहार, अच्छा मानसिक स्वास्थ्य, सौहार्दपूर्ण परिवेश, नई और पुरानी पीढ़ी की सकारात्मक भूमिका तथा अच्छी आर्थिक दशा खुशहाल वृद्धावस्था के लिए अति आवश्यक है । वृद्धावस्था की तैयारी हेतु स्वस्थ जीवन शैली विकसित करने की आवश्यकता है । वृद्धजनों की समस्याओं के कारण और निवारण के लिए समाजशास्त्रियों, समाजकार्य विशेषज्ञों, स्वास्थ्य विशेषज्ञों, मनोवैज्ञानिकों तथा अर्थशास्त्रियों के संयुक्त प्रयास किए जाने की आवश्यकता है ।

संकेत शब्द

जीवन की संध्याबेला, आधुनिकीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण, लौकिकीकरण, पश्चिमीकरण, प्रजननमूलक परिवार, अकेलापन, अवसाद अकेलापन, अवसाद, उपभोक्तावादी समाज, असमायोजन,

प्रस्तावना

भारत एक परंपरा प्रधान देश रहा है । यहाँ के परम्परागत मूल्य और मानदण्ड वृद्धजनों के प्रति आदर भाव और सम्यक् देखभाल का हिमायती रहा है । बेसहारा बुजुर्गों की सहायता के लिए सदाव्रत जैसी अनेक सामाजिक–धार्मिक संस्थाएँ हुआ करती थीं । औद्योगीकरण, नगरीकरण, लौकिकीकरण, पश्चिमीकरण आदि के कारण देश के सामाजिक ताने–बानें में व्यापक परिवर्तन हुआ है तथा वृद्धजनों के प्रति परंपरागत आदर–संमान के भाव पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है । । वृद्धों की संख्या में निरंतर वृद्धि के कारण आज भारत में वृद्धावस्था एक विकट सामाजिक समस्या का स्वरूप ले चुका है । परिवार में उदारवाद का स्थान व्यक्तिवाद ने ले लिया है । वृद्धजनों की बढ़ती आवादी, गिरती प्रस्थिति और भूमिका का प्रभाव सामाजिक संरचना पड़ा है । संयुक्त परिवार और जाति पंचायत की व्यवस्था का विघटन तथा वृद्धों की सत्ता का स्थानान्तरण नई पीढ़ी की ओर हुआ है । जहाँ एक ओर माता–पिता अपनी संतानों की परवरिश में किसी भार का अनुभव नहीं करते हैं, वहीं संताने वृद्ध माता–पिता का तिरस्कार करतीं हैं । नई पीढ़ी यह भूल गयी है कि एक दिन उनको भी वृद्धजनों की श्रेणी में शामिल होकर अपनी ही संतानों से उपेक्षित होना पड़ेगा । वृद्धावस्था का यह दुष्चक्र स्वस्थ समाज के लिए अभिशाप है । तीव्र सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के कारण फलस्वरूप वृद्धजनों में खिन्नता, असहायता,

अकेलापन, अवसाद, अलगाव, मायूसी आदि मानसिक समस्याएँ घर कर गयी है । वृद्धजनों की आर्थिक स्थिति चाहे जो हो वे कमजोरी, अनिद्रा, कमजोर दृष्टि और रुग्णता की समस्या से ग्रस्त हैं[1]। वृद्धावस्था में अकेलापन, सृजनशीलता का अभाव तथा शारीरिक शक्ति के अनुसार नियोजित न हो पाने के कारण उनमें आत्मविश्वास की कमी हुई है । वृद्धजनों की दशा दिनानुदिन समस्याओं के जाल में फँसता जा रहा है । वृद्धजनों की देखभाल, सेवा, सुश्रूषा, उपचार आदि के लिए आज सरकारी, गैर–सरकारी और सामाजिक स्तर पर व्यवस्थित प्रयास और पर्याप्त संसाधनों की आवश्यकता है ।

अध्ययन के उद्देश्य

1. वृद्धजनों की समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना ।
2. वृद्धजनों में असमायोजन की समस्या के निदान में सामाजिक–आर्थिक आधार का अध्ययन करना ।

जीवन प्रत्याशा में वृद्धि के कारण भारत में वृद्धजनों की आवादी में वृद्धि हो रही है । भारत में सन् 1901 में औसत आयु 25 वर्ष से बढ़कर सन् 1991 में यह 60 वर्ष हो गया । सन् 1961 में देश के वृद्धजनों की कुल आवादी की 5.6 प्रतिशत थी तथा एक अनुमान के अनुसार यह सन् 2026 में बढ़कर 12.4 प्रतिशत हो जाएगा[2]। तात्पर्य यह है कि इसी अनुपात में वृद्धजनों का दूसरों पर निर्भर रहने का अनुपात भी बढ़ता चला जएगा । फलस्वरूप बुजुर्गों की समस्याओं से निपटना संपूर्ण समाज का महान कर्त्तव्य है ।

सामाजिक समस्याएँ

उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण आधारभूत और परम्परागत मानवीय मूल्यों का क्षरण हुआ है । इसी कारण वृद्धजनों की प्रस्थिति और भूमिका में अवनमन का कारण अनेक सामाजिक समस्याएँ हैं । ऐसी समस्याएँ सामाजिक इसलिए है क्योंकि इनका सरोकार समाजिक संबंधों के ताने–बाने से है । अध्ययनों से यह तथ्य ज्ञात है कि वृद्धजनों को उन लोगों के साथ अन्तःक्रिया करने में सरलता होती है जो उनकी भावनाओं के अनुसार उनसे संवाद करते हैं । वृद्धावस्था उन व्यक्तियों के लिए समस्या लेकर आता है जो स्वयं को इस अवस्था के लिए तैयारी नही कर लेतें हैं [3]।

आज वृद्धजनों की उपेक्षा का कारण वृद्धावस्था के प्रति लोगों के दृष्टिकोण में घटित व्यापक परिवर्तन है[4] । सामान्यतः वृद्धजन अपने परिवार के सदस्यों से उपेक्षित होने के साथ अकेले समय व्यतीत करते हैं[5]। वृद्धजनों में अकेलापन, विलगाव के कारण उनका सामाजिक जीवन समस्याग्रस्त है[6] । वृद्धजनों के उचित देखभाल तथा उनके अनुभवों से भावी पीढ़ी को मार्गदर्शन और प्रेरणा लेने की आवश्यकता है[7]। तीव्र नगरीकरण और औद्योगीकरण के कारण वृद्धजनों में अलगाव की समस्या बढ़ती है[8] । सामाजिक अलगाव से पुरुष बुजुर्ग महिला बुजुर्ग की तुलना में ज्यादा दुष्प्रभावित हैं[9] । भारत की प्राचीन अंतरपीढ़ीगत सामंजस्य का दर्शन आज के उपभोक्तावादी समाज में नहीं हो रहा है[10]। वृद्धजनों की उपेक्षा करना उनमें दीनता के भाव को बढ़ाना है । वे दीर्घकालीन कमजोरी, बीमारी, निराशा, अकेलापन और अनुपयोगिता की भावना से व्यथित होते हैं[11] । वृद्धजन हमारे समाज की धरोहर हैं तथा वे परिवार और समाज से अलग नहीं होना चाहते हैं[12] । परंपरागत भारतीय समाज में इन समस्याओं का निदान ग्राम, जातीय समूह और संयुक्त परिवार में हो जाया करता था । आधुनिकीकरण के फलस्वरूप इन संस्थाओं की मौलिक दशा में परिवर्तन हो गया है [13]।

आर्थिक समस्याएँ

नगरीकरण और औद्योगीकरण से वृद्धजनों का अलगाव अधिकाधिक होता जाएगा । वृद्धजनों की अनेक समस्याएँ हैं जिनके निदान के लिए सरकार, स्वैच्छिक संस्थाओं, विशेषज्ञों आदि के सम्मिलित प्रयास की आवश्यकता है[14]। आधुनिकीकरण, तकनीकी परिवर्तन और गतिशीलता के कारण लोगों के जीने के तौर–तरीकों और मूल्यों में परिवर्तन हुआ है । इस परिवर्तन के कारण वृद्धजनों के प्रति आदर भाव को दुष्प्रभावित किया है । युवा पीढ़ी का शहर की ओर प्रवजन के कारण उन ग्रामीण वृद्धजनों को दुःखों के पंक में धकेल दिया है जिनके पास पर्याप्त आर्थिक संसाधन नहीं हैं । रोजगार प्राप्त शिक्षित नारी के पास घर में वृद्धजनों की सेवा–सुश्रूषा के लिए समय का अभाव है । नई पीढ़ी अपने प्रजननमूलक परिवार पर ही अपनी आमद का अधिकतर भाग खर्च करता है और अपने ही बुजुर्ग माता–पिता, दादा–दादी पर खर्च करने को प्रमुखता की श्रेणी में नहीं रखता है । इसी कारण वृद्धजनों

में अवसाद, असहायता, दुःख, अकेलापन आदि आम बात है[15] । कुछ वृद्धजन आर्थिक सहारा के अभाव में भिक्षाटन करने के लिए अभिशप्त हैं क्योंकि उन्हें न तो संतानों द्वारा देखभाल का अवसर प्राप्त हो पाता है और न ही सरकारी–गैरसरकारी सहारा मिल पाता है । वृद्धाश्रम भी धनवान बुजुर्गों के लिए ही हितकर साबित हो रहा है । आज की नई पीढ़ी अपने माता–पिता तथा परिवार के अन्य बुजुर्गों से अलग रहना चाहती है । जिन संतानों के लालन–पालन में 'माता–पिता' ने अपनी सुख–सुविधाओं की तिलांजलि दे दी, आज वही संतानें माता–पिता को भार समझ रहीं हैं । आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर बुजुर्गों को असम्मान, अकेलापन और अनेक अन्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर वृद्धजनों की समस्याएँ परनिर्भर वृद्धजनों की तुलना में अधिक होती हैं ।

आज भारत में वृद्धजनों की एक बड़ी संख्या अल्प आर्थिक स्तर पर जीवन व्यतीत कर रही है । पेंशन विहीन सेवानिवृत्त वृद्धजनों की दशा पेंशनयुक्त सेवानिवृत्त वृद्धजनों से बदतर है । ऐसे वृद्ध जो किसी सेवा में न होकर कृषिगत कार्यों में ही लिप्त रहकर जीवन यापन कर रहें हैं, उनकी आकांक्षा उन वृद्धजनों की तुलना में कम है जो सरकारी या गैर सरकारी सेवा में रहकर सेवानिवृत्त हुए हैं । परंपरागत जीवन जीने वाले बुजुर्गों में वंचन और दुख का स्तर सेवानिवृत्त बुजुर्गों की तुलना में कम होता है । पुनश्च, पेंशनयुक्त सेवानिवृत्त बुजुर्ग शारीरिक–मानसिक रूप से अच्छे हैं । अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि बुजुर्गों में आर्थिक शक्ति होना आवश्यक है । आर्थिक शाक्ति युक्त वृद्धजन जीवित रहते अपनी संचित आर्थिक उपलब्धि को अपनी संतति को हस्तांतरित नहीं करना चाहते हैं और कहते हैं कि जब तक उनके हाथ में संपत्ति है तब तक परिवार उनकी देखभाल अवश्य करेगा । गाढ़े दिनों में कुछ वृद्धजनों को तों परिवार से अधिक मित्रगण ही सहायता करते हैं । यह भी सत्य है कि ऐसे परिवार जिसमें बेटा और बहू दोनों आर्थिक गतिविधियों लिप्त या सेवा में योजित होते हैं, उन परिवारों में बुजुर्ग माता–पिता को बच्चों की देखभाल के लिए प्रकार्यात्मक माना ही माना जाता है । ऐसे प्रकार्यात्मक बुजुर्ग अपने बेटे–बहू के प्रेम और सहानुभूति से संतुष्टि का अनुभव करते हैं । नई पीढ़ी अपने बच्चों का लालन–पालन और अपनी अल्प आय का हवाला देकर अपने बूढ़े माता–पिता की उचित देखभाल कर पाने में असमर्थता व्यक्त करती है । अतः आर्थिक रूप से सुरक्षित होना सुखमय बुढ़ापे के लिए एक महत्त्वपूर्ण कारक है ।

स्वास्थ्य की समस्या

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार स्वास्थ्य का अर्थ निरोगित और सशक्त होना न होकर शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से कल्याणमय होने की स्थिति है[16]। ''वृद्धावस्था में स्वस्थ रहना जीवनशैली और आदत पर निर्भर करता है[17] । वे वृद्धजन जो आर्थिक विपन्नता का जीवन व्यतीत कर रहें हैं, वे संतुलित आहार और स्वास्थ्य की उचित देखभाल से वंचित होते हैं । वृद्धजनों में अनिद्रा की समस्या अनेक अन्य समस्याएँ को उत्पन्न करती है । अस्वस्थता के कारण वृद्धावस्था में असमायोजन और अवसाद की समस्या उत्पन्न हो रही है । यह अवस्था अनेक बिमारियों की सुग्राह्य अवस्था है, जैसे– कब्ज, मोटापा, तनाव, उच्च–निम्न रक्तचाप, मधुमेह, कैंसर, प्रोस्टेट की बीमारी, पारकिंसन रोग, अल्झाइमर रोग, अनिद्रा आदि[18]। वृद्धजनों को भावनात्मक, शारीरिक, आर्थिक और स्वस्थ्यपरक सहयोग की आवश्यकता है[19]। अच्छा शारीरिक–मानसिक स्वास्थ्य, शारीरिक व्यायाम, संतुलित आहार, सामाजिक सौहार्द, नई और पुरानी पीढ़ी की सकारात्मक भूमिका तथा अच्छी आर्थिक दशा खुशहाल वृद्धावस्था के लिए अति आवश्यक है[20] । एक अध्ययन के अनुसार 60 वर्ष से अधिक उम्र के प्रत्येक बुजुर्ग अनेक विकारों से ग्रस्त हैं जिसमें प्रमुख हैं– हृदयपरक रोग, आँत संबंधी बीमारी, मूत्रतंत्र की बीमारी, अवसाद, श्वसन संबंधी बीमारी, रक्तचाप की अनियमितता, दृष्टि–श्रवण संबंधी रोग, अस्थिपरक कमजोरी आदि[21]। आर्थिक उपलब्धि से ही वृद्धों का जीवन सुरक्षित नहीं हो जाता, अपितु परिवार के साथ जुड़ाव का उनके मनःपटल पर सकारात्मक प्रभाव डालता है । वृद्धावस्था में शरीर के जीर्ण होने की प्रक्रिया तीव्रता के साथ घटित होती है । इसी कारण यदि यह कहा जाय कि वृद्धावस्था अनेक शारीरिक और मानसिक व्याधियों तथा कष्टों का केन्द्र है तो अतिशयोक्ति नहीं होगा ।

मनोवैज्ञानिक और समायोजन की समस्या

वृद्धजनों की मनोवैज्ञानिक समस्याएँ अनेक हैं, जैसे– अकेलापन, पृथक्करण, अवसाद, स्वयं की भूमिका से असंतुष्टि आदि । वृद्धों में समायोजन की समस्या सबसे बड़ी मनोवैज्ञानिक समस्या है, जो उम्र बढ़ने के साथ बढ़ती जाती है[22] । वृद्धावस्था में अनेक मनोवैज्ञानिक कारकों से अनेक समस्याओं का प्रादुर्भाव

होता है । नई पीढ़ी के साथ वृद्धजनों का समायोजन कठिन हो जाना एक गम्भीर मनोवैज्ञानिक समस्या है[23]। असहाय होने की भावना, अवसाद, याददास्त का कम होना, नकारात्मक अनुभूति, अकेलापन, विलगाव, भूमिका का अवनमन आदि मनोवैज्ञानिक समस्याएँ वृद्धजनों के लिए कष्टकारी है[24]। सेवानिवृत्त सरकारी सेवकों की समस्याओं के मूल में उनकी घटती हुई आय, अस्वस्थता, समायोजन की सामाजिक–मनोवैज्ञानिक समस्याएँ और समय को व्यतीत करने की समस्या प्रमुख हैं[25] । अस्वस्थता के कारण वृद्धों की मानसिक क्षमता में कमीं आती है । इसी प्रकार अस्वस्थता के कारण उनमें असहायता, हीनता और चिंता के दुष्चक्र का प्रादुर्भाव होता है जो अनेकानेक समस्याओं को जनित करता है । औद्योगीकरण, नगरीकरण आधुनिक प्रक्रियाओं के कारण वृद्धजन परिवार और समाज के साथ सम्यक् समायोजन करने में स्वयं को सक्षम नहीं पाते हैं । अनेक बुजुर्गों की समस्या यह भी है कि वे अपनी संतानों की असफलता से चिंतित हैं । कुछ वृद्धजन अप्रसन्न रहते हैं क्योंकि उनकी संताने उनकी कदम–कदम पर उपेक्षा करतीं हैं । अनेक समस्याओं के सम्मिलित प्रभाव के कारण उनमें असुरक्षा की भावना घर कर जाती है । वृद्धजनों का शारीरिक–मानसिक रूप से कमजोर हो जाने के कारण परिवार के सदस्यों से सहयोग की आवश्यकता होती है । सहयोग न मिलने के कारण बुजुर्गों की समस्याओं में वृद्धि हो जाती है[26]। उचित समाजीकरण के अभाव में संताने सहज व्यवहार नहीं करती हैं तथा उपयुक्त समाजीकरण का अभाव अनेक सामजिक समस्याओं की जननी है[27]।

निष्कर्ष एवं सुझााव

वृद्धावस्था की समस्त समस्याएँ एक दूसरे के साथ जुड़ी हैं । सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, समायोजनपरक, स्वास्थ्यपरक आदि समस्याएँ वृद्धों के जीवन की संध्याबेला को मज़बूर और मज़लूम बनाने में अहम् भूमिका अदा करतीं हैं । शारीरिक–मानसिक स्वस्थ्य, आर्थिक स्वतंत्रता और समंजस्य के कारण जीवन के चौथेपन की समस्या को न्यून किया जा सकता है । नई और पुरानी पीढ़ियों को विचारों में लोचशीलता लाने और एक–दूसरे के प्रति अधिकार और कर्त्तव्य में संतुलन लाने की आवश्यकता है । वृद्धजनों की समस्याओं के कारणों की खोज और निदान के लिए समाजशास्त्रियों, समाजकार्य विशेषज्ञों, स्वास्थ्य विशेषज्ञों, मनोवैज्ञानिकों तथा अर्थशास्त्रियों के संयुक्त प्रयास किए जाने की आवश्यकता है । नीति निर्धारकों, योजनाकारों और आधारभूत स्तर पर कार्य करने वाले व्यक्तियों के साथ मिलकर ऐसी रणनीति बनाने की आवश्यकता है जो बुजुर्गों के लिए बेहतर हो सके[28] । इनकी समस्याओं के निदान के लिए सक्षम कानूनी पहल की आवश्यकता है जो व्यावहारिक धरातल पर वृद्धजनों की सुरक्षा के लिए परिवार, समाज और सरकार की भूमिका को तय करना आवश्यक है ।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. नाटेशन, हेमलता, 1990. ''प्रोब्लेम्स ऑफ दी एजेड'' इन *नेशनल सिम्पोसियम ऑफ साइको–सोशल, मेडिकल एण्ड बायोलॉजिकल आस्पेक्ट्स ऑफ एजिंग (अगस्त 9–10, कोयम्बटूर),* बुक ऑफ एबस्ट्रैक्ट्स; कोयम्बटूर पी.एस.जी. कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड साइंस, डिपार्टमेंट ऑफ साइकोलॉजी, पेज. 23 ।
2. अटल, योगेश (2016), *भारतीय समाज नैरन्तर्य एवं परिवर्तन* दिल्ली ।
3. प्रदीप कुमार, धर्मेन्द्र प्रताप सिंह ''प्रोब्लेम्स ऑफ दी एजेड इन इंडिया'' इन *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिशर्च,* 2008; 49:3 ।
4. भाई, एल. थारा 1998ः कान्सेप्ट ऑफ ओल्ड एजः अ स्टडी अमंग थ्री जनरेशन्स (आईएसए पेपर); स्पेन, इंटरनेशनल सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन ।
5. चौहान, एस.के. 1987ः ''एज एण्ड सोशल स्ट्रेटिफिकेशन'' इन *शर्मा, मदन लाल. एण्ड डाक, टी.एम. (एडि.) एजेइंग इन इण्डियाः चैलेंजेज फॉर दी सोसायटी;* दिल्ली, पेज. 94–105 ।
6. फुस्टिनोनी, ओस्वाल्डो 1982ः ''दी ओल्ड एजः चैलेंज एण्ड अपॉरचुनिटीस'' इन स्वस्थ हिन्द, वोल. 26, नं. 3–4, मार्च–अप्रैल, पेज. 69–71 ।
7. हल्दर, अरुण 1998ः ''ओल्ड एजः एनसियंट एण्ड मॉडर्न टाइम्स'' इन *एजेइंग एण्ड सोसायटीः इंडियन जर्नल ऑफ जेरोन्टोलॉजी,* वोल. 8, नं. 3–4, जुलाई–दिसम्बर, पेज. 1–10 ।

8. बालकृष्ण 1986ः ''ओल्ड एज प्रॉब्लेम्स इन दी पर्सपेक्टिव ऑफ एज ट्रेट्स'' इन *वर्ल्ड कांग्रस ऑफ दी इंटरनेशनल सोसियोलॉजिकल एसोसिएशन (11वाँ, अगस्त 18–22, नई दिल्ली) प्रोसीडिंग्स* ।
9. रंजन, रेनू, 1986. ''एजिंग ईश्यूस इन इंडिया (विथ स्पेशल रेफरेंश टू बिहार)'' इन *वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ दी इंटरनेशनल सोशियोलोजिकल एसोसिएशन (11 अगस्त 18–22. न्यू दिल्ली), पेपर्स* ।
10. तालिब, मोहम्मद 2000ः ''दी लास्ट सीन'' इन सेमिनार, नं. 488, अप्रैल, पेज. 51–54 ।
11. रामनाथ, राजलक्ष्मी 1989ः ''प्रॉब्लेम्स ऑफ दी एजेड'' इन *पाती, आर.एन. एण्ड जेना, बी. (ईडीएस.) एजेड इन इंडियाः सोशियो–डिमोग्राफिक डाइमेंशन;* नई दिल्ली, आशीष, पेज. 125–132 ।
12. ''लोंगिंग टू बिलोंग'' इन हेल्थ फॉर मिलियन्स, वोल. 25, नं. 5, सितम्बर–अक्टूबर, 1999, पेज. 2 ।
13. मिश्रा, सरस्वती 1999ः (''प्रोब्लेम्स ऑफ दी एजेड एण्ड दियर्स सोल्यूशन्स'') इन *इंटरनेशनल कान्फरेन्स ऑन जेरियाट्रिक्स एण्ड जेरेन्टोलॉजी (नवंबर 12–14, नई दिल्ली) सूवेनिर `म अब्सट्रैक्ट बुक;* पेज. 61 (मीमिओग्राफ्ड) ।
14. कोहली, डी.आर. 1987ः ''चैलेंज ऑफ एजिंग'' इन *शर्मा, एम.एल. एण्ड डाक, टी. एम. (ईडीएस.) एजिंग इन इंडियाः चैलेंज फॉर दी सोसायटी*; दिल्ली, अजंता, पेज. 3–7 ।
15. वाखरे, एम.एम. 1995ः ''इंटरनेशनल ईयर ऑफ दी फेमिलीः इंडिया एण्ड दी एजेड (60 एण्ड अबव)'' इन वन्यजाति, वोल. 43, नं0 4, जनवरी, पेज. 1–2 ।
16. ीजजचेरूध्धीपण्उण्पापचमकपंण्वतहझूपाप
17. भाटिया, एच.एस., 1983. एजिंग एण्ड सोसायटीः ए सोशियोलॉजिकल स्टडी ऑफ रिटायर्ड पब्लिक सर्वेंट्सः उदयपुर, आर्यास बुक सेन्टर ।
18. थापर, जी.डी. 1994ः लाइफ आफ्टर फिफ्टी; नई दिल्ली, यूबीएस ।
19. नयर, पी.के.बी. 1990ः प्रॉब्लेम्स एण्ड नीड्स ऑफ दी एजेड इन इंडिया'' इन वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ सोश्योलॉजी (जुलाई 9–13, स्पेन) पेपर्स ।
20. नटराजन, वी.एस. 1995ः एजिंग व्युटिफुली; मद्रास शक्ति पथिपगम ।
21. पाठक, जे.डी., 1982 ''हेल्थ प्रॉब्लेम्स ऑफ दी एजेड इन इंडिया'' इन देसाईष् के.जी. (ईडी.), एजिंग इन इंडिया; बाम्बे, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, पेज. 36–42 ।
22. राममूर्ति, पी.वी., 1970. ''लाइफ सैटिसफैक्शन इन दी ओल्डर ईयर्स'' इन इंडियन जर्नल ऑफ जीरेन्टोलॉजी, वोल. 2, नं. 3–4, जुलाई–अक्टूबर, पेज. 68–70 ।
23. पीटर, टॉन्सेण्ड 1957ः दी फेमिली लाइफ ऑफ ओल्ड पीपल, पेज. 152 ।
24. कुमार, पी. एण्ड सिंह, डी.पी., 2008. ''प्रॉब्लेम ऑफ दी एजेड इन इंडिया'' इन *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिशर्च,* 49:6 ।
25. मोहन्ती, 1989 ''रिटायर्ड गवर्नमेन्ट सर्वेन्ट्स एण्ड दीयर प्रॉब्लेम्स ऑफ सोशियो साइकोलॉजिकल एडजस्टमेन्ट'' इन पाती, आर.एन.एण्ड जेना. बी. (ईडीएस.), *एजेड इन इंडियाः सोशियो डिमोग्राफिक डाइमेन्शन्स;* नई दिल्ली, आशीष, पेज. 213–27 ।
26. नायर, पी.के.बी. 1980ः ए स्टडी ऑफ दी वर्किंग ऑफ ओल्ड एज पेंशन स्कीम इन केरल; रिसर्च रिपोर्ट, न्यू दिल्ली, डिपार्टमेंट ऑफ सोशल वेलफेयर ।
27. मिश्र, सरस्वती 1987ः सोशल एडजस्टमेंट इन ओल्ड एज; दिल्ली, बी.आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन ।
28. नायर, पी.के.बी. 1989–90ः ''प्रोब्लेम्स एण्ड नीड्स ऑफ इंडियाः ए मैक्रो पर्सपेक्टिव'' इन जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च, वोल. 32–33, नं. 1–2, मार्च–सितम्बर, पेज. 1–13 ।